

बिजौरा पुं. (तद्.) बीजपूर, बीजपूरक, बड़ी नारंगी के समान एक प्रकार का नींबू वि. जो बीज से उत्पन्न हुआ हो 'कलम' लगाकर नहीं, बीजू।

बिझुकना अ.क्रि. (देश.) झोंका, भड़कना, डरना, चौंकना, तननेके कारण टेढ़ा होना, चमकना, तनना, चंचल होना।

बिटरना अ.क्रि. (देश.) पानी आदि का घँघोला जाना, घँघोले जाने पर पानी आदि का पीने लायक न रहना, गंदा रहना या होना, घँघोलना।

बिटिया स्त्री. (देश.) पुत्री, बेटी।

बिट्ठल पुं. (देश.) भगवान विष्णु का एक नाम, पंढरपुर (महाराष्ट्र) के मंदिर में भगवान विष्णु की विशेष मुद्रा वाली मूर्ति, पांडुरंग, बिठोवा।

बिड़ई स्त्री. (देश.) गेंडुरी, इंडरी, (वैदिक शब्द इंड्रा) कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे भरा हुआ घड़ा या बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं।

बिडाल पुं. (तत्.) 1. नर बिल्ली, मार्जार, बिलाव 2. आँख का ढेला 3. बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था 4. दोहे का एक भेद या प्रकार।

बिडाल-वृत्तिक वि. (तत्.) स्वभाव में लोभी, दंभी, ढोंगी, कपटी, हिंसा आदि की अधिकता वाला पुरुष, सबको धोखा देने वाला, सबसे टेढ़ा रहने वाला।

बिडालाक्ष पुं. (तत्.) बिल्ली के नेत्रों के समान नेत्रों वाला, अंधकार में भी अनुमान से जान लेने वाला दे. बिडाल एक दैत्य।

बिडौजा पुं. (तद्.) इंद्र, मधवा, देवराज।

बिढ़वना पुं. (देश.) अर्जन, कमाई, कमाना, इकट्ठा करना, संचार करना।

बिताना स.क्रि. (तद्.) व्यतीत करना, गुजारना।

बित्ता पुं. (तद्.) मनुष्य के हाथ के अँगूठे और छोटी उँगली के सिरों के बीच की अधिकतम दूरी, बलिश्त।

बिथरना अ.क्रि. (तद्.) बिथुरना, बिस्तरण, बिखरना, अलग-अलग होना, खिलना, छिन्न-भिन्न होना, नष्ट-भ्रष्ट होना स.क्रि. बिखेरना।

बिदकना अ.क्रि. (देश.) डरकर या चौंक कर पीछे हटना, भड़कना, फटना, चिरना, घायल होना, बिचकना।

बिदर पुं. (तद्.) 1. विदीर्ण होना, फटन, दरार 2. विदर्भ देश (बरार)।

बिदरी स्त्री. (तद्.) विदर्भ जस्ते और ताँबे के मेल से बर्तन आदि बनाने का काम जिसमें बीच-बीच में सोने या चाँदी के तारों से नक्काशी होती है, बिदर की धातु का बना हुआ सामान।

बिदारी-कंद पुं. (तत्.) एक प्रकार का कंद जो भूमि के अंदर होता है और उसकी लता जमीन पर या पेड़ों पर फैलती है, बिलाई कंद।

बिधना अ.क्रि. (तद्.) बिंध जाना, उलझन में फँसना, छिदना, कंटकित होना।

बिन अव्य. (देश.) बिना, बगैर, छोड़कर स्त्री. (अर.) मूल आधार, कारण।

बिनना स.क्रि. (देश.) बीनना, छाँटना, चुनना, डंक मारना, बुनना।

बिना अव्य. (तद्.) (किसी व्यक्ति/वस्तु आदि के) अभाव में, बगैर स्त्री. (अर.) आधार, नींबू, बुनियाद, कारण।

बिना टिकट पुं. (तत्.) प्रवेश मूल्य चुकाए बिना किसी यात्रा में अथवा किसी ऐसे स्थान में प्रवेश करना जहाँ के लिए अन्यथा मूल्य चुकाना होता है।

बिनौला पुं. (देश.) कपास का बीज, बनौर, कुकटी, बिनौरा।

बिपत स्त्री. (तद्.) 1. विपद, विपत्ति, मुसीबत, विपदा, संकट, आफत, खतरा 2. नाजुक घड़ी, नाजुक मौका।

बिफरना अ.क्रि. (तद्.) विप्लवन, विस्फालन, उत्तेजित होना, कुद्ध होना, लड़ने को तैयार होना, ठीठ